### **Quick word tests**

| तरक़्क़ी      | तरक़्क़ी      | आह्लाद               | आह्नाद        | फ्रीज      | फ्रीज      | मग्ज़         | मग्ज           | हृत्स्थल     | हत्स्थल      | सिर्फ      | सिर्फ      |
|---------------|---------------|----------------------|---------------|------------|------------|---------------|----------------|--------------|--------------|------------|------------|
| ज़्यादा       | ज़्यादा       | <sub>ब्राह्म</sub> ण | ब्राह्मण      | ह्रितिक    | ह्रितिक    | सम्यग्ज्ञान   | सम्यग्ज्ञान    | ज्योत्स्रा   | ज्योत्स्ना   | व्हिस्की   | व्हिस्की   |
| मन्ज़ूर       | मन्ज़ूर       | मिस्त्री             | मिस्त्री      | एल्ज़े     | एल्ज़े     | दिग्दर्शन     | दिग्दर्शन      | ईषत्स्पृष्ट् | ईषत्स्पृष्ट् | इश्क       | इश्क       |
| इलेक्ट्रान    | इलेक्ट्रान    | दुष्प्रह्य           | दुष्प्रह्य    | उत्त्य     | उत्त्य     | पंक्ति        | पंक्ति         | उत्प्रुत     | उत्स्रुत     | प्रश्न     | प्रश्न     |
| स्ट्रीटकार    | स्ट्रीटकार    | अद्भुत               | अद्भुत        | उत्य       | उत्य       | मंगलवार       | मंगलवार        | सद्गति       | सद्गति       | रुश्द      | रुश्द      |
| छुट्टी        | <b></b>       | इल्ज़ाम              | इल्जाम        | रत्न       | रत्न       | दुर्लंघ्य     | दुर्लंघ्य      | सद्गन्थ      | सद्ग्रन्थ    | वैशिष्ट्य  | वैशिष्ट्य  |
| महाराष्ट्र    | महाराष्ट्र    | अक्षरे               | अक्षरे        | सज़्स      | सज़्स      | पच्चीस        | पच्चीस         | उद्घाटन      | उद्घाटन      | ओष्ठ्य     | ओष्ठ्य     |
| ज्येष्ठ       | ज्येष्ठ       | ज्ञान                | ज्ञान         | एज्जा      | एज्जा      | अच्छा         | अच्छा          | ज़िद्दी      | ज़िद्दी      | मिस्त्री   | मिस्त्री   |
| दर्ष्टांत     | दर्षांत       | मौके                 | मीके          | ब्यर्थे    | ब्यर्थे    | उज्र          | <b>उ</b> ज़    | प्रसिद्ध     | प्रसिद्ध     | आह्वान     | आह्वान     |
| चिट्ठी        | चिट्ठी        | कैंटोमेंट            | कैंटोमेंट     | तरक़्क़ी   | तरक़्क़ी   | संस्कृत       | संस्कृत        | उद्बोध       | उद्बोध       | आह्लाद     | आह्नाद     |
| वाङ्मय        | वाङ्मय        | छूट कुछ              | छूट कुछ       | फ्रैक्चर   | फ्रेक्चर   | हिंस्र        | हिंस्र         | द्रव         | द्रव         | ह्रास      | हास        |
| वैशिष्ट्य     | वैशिष्ट्य     | करेंट                | करेंट         | डॉक्टर     | डॉक्टर     | छुट्टी        | <b>छु</b> ट्टी | दारिद्य      | दारिद्र्य    | अंकुड़ा    | अंकुड़ा    |
| पुनस्स्थापना  | पुनस्स्थापना  | राष्ट्रून            | राष्ट्रून     | इलेक्ट्रॉन | इलेक्ट्रॉन | चिट्ठी        | चिट्ठी         | अध्रुव       | अध्रुव       | अंतर्निहित | अंतर्निहित |
| स्वास्थ्य     | स्वास्थ्य     | कॉफी                 | कॉफी          | रक्त       | रक्त       | विशाखपट्नम    | विशाखपट्नम     | मंज़ूर       | मंज़ूर       | अन्तः      | अन्त:      |
| कम्प्यूटर     | कम्प्यूटर     | हिंदू-मुस्लिम        | हिंदू-मुस्लिम | वक्त्र     | वक्त्र     | ट्रैन         | ट्रैन          | मंत्री       | मंत्री       | अंतर्वेशन  | अंतर्वेशन  |
| सान्ध्य       | सान्ध्य       | करणाऱ्या             | करणाऱ्या      | युक्त्यभास | युक्त्यभास | सुपाठ्य       | सुपाठ्य        | स्वातंत्र्य  | स्वातंत्र्य  | अग्नि      | अग्नि      |
| इ्ज़त         | इज़्जत        | स्रेह                | स्नेह         | वक्फ़      | वक्फ       | लड्डू         | लड्ड           | द्वंद्व      | द्वंद्व      | अद्भुत     | अद्भुत     |
| उज्ज्वल       | उज्ज्वल       | श्री                 | श्री          | शुक्ल      | शुक्ल      | ब्रह्मण्य     | ब्रह्मण्य      | उन्नीस       | उन्नीस       | छुछुंदर    | छुछंदर     |
| प्राप्त्याशा  | प्राप्त्याशा  | स्त्री               | स्त्री        | रिक्शा     | रिक्शा     | उत्क्रम       | उत्क्रम        | इंस्टिट्यूट  | इंस्टिट्यूट  | हुंकार     | हुंकार     |
| इकत्तीस       | इकत्तीस       | ध्ड्यां              | ध्ड्यां       | पक्ष       | पक्ष       | उत्क्षेप      | उत्क्षेप       | उन्हें       | उन्हें       | हित इच्छुक | हित इच्छुक |
| सत्रह         | सत्रह         | शक्ति                | शक्ति         | लक्ष्मी    | लक्ष्मी    | विद्युत्प्रहक | विद्युत्प्रहक  | दीन्ह्यो     | दीन्ह्यो     | कुर्री     | कुर्री     |
| पद्म          | पद्म          | महाराष्ट्र           | महाराष्ट्र    | अभक्ष्य    | अभक्ष्य    | महत्त्व       | महत्त्व        | नैप्स्यून    | नैप्स्यून    | कुल्हिया   | कुल्हिया   |
| विद्यार्थी    | विद्यार्थी    | कटू                  | कटू           | दिक्स्थापन | दिक्स्थापन | पत्थर         | पत्थर          | प्राप्त      | प्राप्त      |            |            |
| उन्नीस        | उन्नीस        | रूप                  | रूप           | सख़्त      | सख़्त      | विद्युत्दर्शी | विद्युत्दर्शी  | सब्ज़ी       | सब्जी        |            |            |
| पश्चिम        | पश्चिम        | ुहरू                 | हूँ           | अख्त्यार   | अख्त्यार   | पत्नी         | पत्नी          | छब्बीस       | छब्बीस       |            |            |
| श्रीलंका      | श्रीलंका      | बुत्तो               | बुत्तो        | ज़ख़्म     | ज़ख़       | सपत्य         | सपत्न्य        | मार्किट      | मार्किट      |            |            |
| विश्वविद्यालय | विश्वविद्यालय | बार्गी               | बार्गी        | ख्रिष्टां  | ख्रिष्टां  | उत्प्रवास     | उत्प्रवास      | दुर्ज्ञेय    | दुर्ज्ञेय    |            |            |
| स्नान         | स्नान         | कुंग                 | कुंग          | फ़ख        | फ़ख        | त्याहिक       | त्र्याहिक      | उर्दू        | उर्दू        |            |            |
| बुद्ध         | बुद्ध         | हूप                  | हूप           | अग्ग्रास   | अग्ग्रास   | विद्युतशक्ति  | विद्युतशक्ति   | निर्द्वन्द्व | निर्द्वन्द्व |            |            |
|               |               |                      |               |            |            |               |                |              |              |            |            |

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'धामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

# 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

## केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

#### जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेंट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसे-सिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43.950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी  $\sqrt{\frac{3.5-5.6}{6}}$  किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिख़े, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदेभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव पपखपवपवखवव पपगपवपवगवव पपघपवपवघवव पपङपवपवङवव पपचपवपवचवव पपछपवपवछवव पपजपवपवजवव पपझपवपवझवव पपञपवपवञवव पपटपवपवटवव पपठपवपवठवव **uusuauasaa** पपढपवपवढवव पपणपवपवणवव पपतपवपवतवव पपथपवपवथवव पपदपवपवदवव पपधपवपवधवव पपनपवपवनवव **uuuuauauaa** पपफपवपवफवव *<u>uuauauaaaa</u>* पपभपवपवभवव **ччнчачанаа** पपयपवपवयवव पपरपवपवरवव पपलपवपवलवव पपळपवपवळवव **uuauauaaa** पपशपवपवशवव पपषपवपवषवव पपसपवपवसवव

पपहपवपवहवव पपकपवपवक्षवव पपखपवपवख़वव पपग़पवपवग़वव पपज़पवपवज़वव पपड़पवपवड़वव पपड़पवपवढ़वव पपफ़पवपवक़वव पपफ़पवपवक़वव पपथ़पवपवय़वव पपक्षपवपवक्षवव पपझपवपवझवव पपज्ञपवपवज्ञवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव पपऄपवपवऄवव पपॲपवपवॲवव पपडपवपवडवव पपर्डपवपवर्डवव पपउपवपवउवव पपऊपवपवऊवव **чч**ए**ч**वपवएवव पपऐपवपवऐवव पपऍपवपवऍवव पपऎपवपवऎवव पपआपवपवआवव पपओपवपवओवव पपऔपवपवऔवव पपऋपवपवऋवव पपऋपवपवऋवव पपल्पवपवलृवव पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव

पपखपवपवखवव

पपग्रपवपवग्रवव

पपघ्रपवपवघ्रवव

पपङ्गपवपवङ्गवव पपच्चपवपवच्चवव पपछ्पवपवछ्रवव पपज्रपवपवज्रवव पपझ्रपवपवझ्रवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपट्रपवपवट्रवव पपठ्रपवपवठ्रवव पपडपवपवडवव पपद्रपवपवद्रवव पपण्रपवपवण्रवव **чч**ячачаяаа पपथ्रपवपवथ्रवव पपद्रपवपवद्रवव पपध्रपवपवध्रवव पपन्नपवपवन्नवव **чч**ичача у а а पपफ्रपवपवफ्रवव पपब्रपवपवब्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपम्रपवपवम्रवव पपय्रपवपवय्रवव पपरूपवपवरूवव पपल्लपवपवल्लवव पपव्रपवपवव्रवव पपश्रपवपवश्रवव पपष्रपवपवष्रवव पपस्रपवपवस्रवव पपह्रपवपवह्रवव

पपळ्रपवपवळ्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपञ्चपवपवञ्चवव

**Conjunct spacing** 

पपक्तपवपवक्तवव पपरुपवपवरुवव पपरूपवपवरूवव पपड्यपवपवड्यवव पपज्जपवपवज्जवव पपज्थपवपवज्थवव पपज्यपवपवज्यवव पपज्सपवपवज्सवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपट्यपवपवट्यवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपड्यपवपवड्यवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपट्टपवपवट्टवव पपट्रपवपवट्रवव पपठ्रपवपवठ्रवव पपड्टपवपवडूवव पपडूपवपवडूवव पपढूपवपवढूवव पपत्तपवपवत्तवव पपत्खपवपवत्खवव पपत्थपवपवत्थवव पपत्नपवपवत्नवव पपत्सपवपवत्सवव पपत्यपवपवत्यवव पपद्धपवपवद्धवव पपद्गपवपवद्गवव पपद्धपवपवद्भवव पपद्धपवपवद्भवव

पपद्वपवपवद्ववव पपद्धपवपवद्धवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपद्धपवपवद्भवव पपद्दपवपवद्दवव पपश्चपवश्चवव पपन्मपवपवन्मवव पपल्जपवपवल्जवव पपल्थपवपवल्थवव पपत्भपवपवत्भवव पपल्मपवपवल्मवव पपल्यपवपवल्यवव पपद्यपवपवद्यवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपष्टपवपवष्टवव पपश्चपवश्चवव पपष्ठपवपवष्ठवव पपल्जपवपवल्जवव पपह्लपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्मपवपवह्मवव पपह्यपवपवह्यवव पपह्लपवपवह्लवव पपह्नपवपवह्नवव

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव पपहूपवपवहूवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहृवव पपहुपवपवहुवव पपहृपवपवहृवव पपरुपवपवरुवव पपरूपवपवरूवव पपदुपवपवदुवव पपदूपवपवदूवव पपदुपवपवदूवव पपदुपवपवदुवव

**Vowel sign spacing** 

पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकेपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकृपप पपपृपपरृपपकृपप पपपृपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप

पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव **Numeral spacing** ००००१०१०११ ००१०१०११११ ००२०१०१२११ ००३०१०१३११ ००४०१०१४११ ००५०१०१५११ ००६०१०१६११ ००७०१०१७११ ००८०१०१८११ ००९०१०१९११ Letter-punct spacing पपक, पवक. पपख, पवख. पपग, पवग. पपघ, पवघ. पपङ. पवङ. पपच, पवच.

पपक, पवक. पपख, पवख. पपग, पवग. पपघ, पवघ. पपछ, पवछ. पपछ, पवछ. पपज, पवज. पपझ, पवझ. पपञ, पवझ. पपञ, पवट. पपठ, पवट. पपठ, पवट. पपढ, पवट. पपढ, पवढ. पपढ, पवढ. पपण, पवण. पपत, पवत. पपप, पवप. पपप, पवप. पपप, पवप.

पपफ, पवफ. पपब, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपय, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल. पपळ, पवळ. पपव, पवव. पपश, पवश. पपष, पवष. पपस, पवस. पपह, पवह. पपक़, पवक़. पपख़, पवख़. पपग्, पवग्र. पपज़, पवज़. पपड़, पवड़. पपढ़, पवढ़. पपफ़, पवफ़. पपय़, पवय़. पपक्ष, पवक्ष. पपज्ञ, पवज्ञ. पपअ, पवअ. पपऄ. पवऄ. पपॲ, पवॲ. पपड. पवड. पपर्ड, पवर्ड. पपउ, पवउ. पपऊ, पवऊ. पपए. पवए. पपऐ. पवऐ.

पपऍ, पवऍ.

पपऎ, पवऎ.

पपआ, पवआ. पपओ, पवओ, पपऔ, पवऔ, पपऋ, पवऋ. पपऋ, पवऋ. पपल, पवल. पपल्, पवल्. पपङ्ग, पवङ्ग. पपछ, पवछ. पपटू, पवटू. पपठू, पवठू. पपडू, पवडू. पपढू, पवढू. पपद्र, पवद्र. पपरू, पवरू. पपह्न, पवह्न. पपळू, पवळू. पपक्त, पवक्त. पपरु, पवरु. पपरू, पवरू. पपट्ट, पवट्ट. पपट्र, पवट्र. पपठू, पवठू. पपडू, पवडू. पपड्ड, पवड्ड. पपट्ट, पवट्ट. पपद्ध, पवद्ध. पपद्ग, पवद्ग. पपद्ध, पवद्ध. पपद्ध, पवद्ध.

पपद्ग, पवद्ग.

पपद्ध, पवद्ध.

पपह, पवह. पपष्ट. पवष्ट. पपत्भ, पवत्भ. पपष्ठ, पवष्ठ. पपल्ज, पवल्ज. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्ल, पवह्ल. पपह्न, पवह्न. पपहु, पवहु. पपहू, पवहू. पपह्र, पवहृ. पपह्र, पवहृ. पपह्, पवहू. पपहू, पवहू. पपरु, पवरु. पपरू, पवरू. पपद्, पवद्. पपदू, पवदू. पपद्, पवद्. पपकः पवकः पपख; पवख: पपगः पवगः पपघ; पवघ: पपङ: पवङ: पपचः पवचः पपछः पवछः पपजः पवजः पपझ; पवझ:

पपञ; पवञ:

पपट: पवट:

पपठ: पवठ:

| पपड; पवड:     | पपॲ; पवॲ:      | पपड्टु; पवड्टू:  | पपघ। पवघ:     | पपड़। पवड़:     | पपह्न। पवह्न:   | पपरू। पवरू:   |
|---------------|----------------|------------------|---------------|-----------------|-----------------|---------------|
| पपढ; पवढ:     | पपइ; पवइ:      | पपड्डु; पवड्डु:  | पपङ। पवङ:     | पपढ़। पवढ़:     | पपळू। पवळू:     | पपदु। पवदुः   |
| पपण; पवण:     | पपई; पवई:      | पपढूँ; पवढूँ:    | पपच। पवच:     | पपफ़। पवफ़:     |                 | पपदूँ। पवदूँ: |
| पपत; पवत:     | पपउ; पवउ:      | पपद्धः पवद्धः    | पपछ। पवछ:     | पपय्न। पवयः     | पपक्त। पवक्तः   | पपदृ। पवदृः   |
| पपथ; पवथ:     | पपऊ; पवऊ:      | पपद्ग; पवद्गः    | पपज। पवज:     | पपक्ष। पवक्ष:   | पपरु। पवरु:     |               |
| पपद; पवद:     | पपए; पवए:      | पपद्ध; पवद्धः    | पपझ। पवझ:     | पपज्ञ। पवज्ञ:   | पपऱ्रू। पवऱ्रू: | -             |
| पपध; पवध:     | पपऐ; पवऐ:      | पपद्भ; पवद्भः    | पपञ। पवञ:     |                 | पपट्ट। पवट्टः   | पपक! पवक?     |
| पपन; पवन:     | पपऍ; पवऍ:      | पपद्व; पवद्व:    | पपट। पवट:     | पपअ। पवअ:       | पपट्ठ। पवट्ठः   | पपख! पवख?     |
| पपप; पवप:     | पपऎ; पवऎ:      | पपद्ध; पवद्ध:    | पपठ। पवठ:     | पपञ्जे। पवञ्जे: | पपठ्ठ। पवठ्ठ:   | पपग! पवग?     |
| पपफ; पवफ:     | पपआ; पवआ:      | पपद्द; पवद्द:    | पपड। पवड:     | पपॲ। पवॲ:       | पपडूँ। पवडूँ:   | पपघ! पवघ?     |
| पपब; पवब:     | पपओ; पवओ:      | पपष्ट; पवष्ट:    | पपढ। पवढ:     | पपइ। पवइ:       | पपडूँ। पवडूँ:   | पपङ! पवङ?     |
| पपभ; पवभ:     | पपऔ; पवऔ:      | पपन्भ; पवन्भ:    | पपण। पवण:     | पपई। पवई:       | पपढूँ। पवढूँ:   | पपच! पवच?     |
| पपम; पवम:     | पपऋ; पवऋ:      | पपष्ठ; पवष्ठ:    | पपत। पवत:     | पपउ। पवउ:       | पपद्धै। पवद्धैः | पपछ! पवछ?     |
| पपय; पवय:     | पपऋ; पवऋ:      | पपल्ज; पवल्जः    | पपथ। पवथ:     | पपऊ। पवऊ:       | पपद्ग। पवद्गः   | पपज! पवज?     |
| पपर; पवर:     | पपलः; पवलः:    | पपह्न; पवह्न:    | पपद। पवद:     | पपए। पवए:       | पपद्व। पवद्वः   | पपझ! पवझ?     |
| पपल; पवल:     | पपॡ; पवॡ:      | पपह्न; पवह्न:    | पपध। पवध:     | पपऐ। पवऐ:       | पपद्भ। पवद्भः   | पपञ! पवञ?     |
| पपळ; पवळ:     |                | पपह्न; पवह्न:    | पपन। पवन:     | पपऍ। पवऍ:       | पपद्व। पवद्वः   | पपट! पवट?     |
| पपव; पवव:     |                | पपह्न; पवह्न:    | पपप। पवप:     | पपऎ। पवऎ:       | पपद्ध। पवद्धः   | पपठ! पवठ?     |
| पपश; पवश:     | पपङ्गः, पवङ्गः |                  | पपफ। पवफ:     | पपआ। पवआ:       | पपद्द। पवद्दः   | पपड! पवड?     |
| पपष; पवष:     | पपछ्र; पवछ्र:  | पपहु; पवहु:      | पपब। पवब:     | पपओ। पवओ:       | पपष्ट्। पवष्टः  | पपढ! पवढ?     |
| पपस; पवस:     | पपट्र; पवट्र:  | पपहूँ; पवहूँ:    | पपभ। पवभ:     | पपऔ। पवऔ:       | पपन्भ। पवन्भः   | पपण! पवण?     |
| पपह; पवह:     | पपठ्र; पवठ्र:  | पपहें; पवहें:    | पपम। पवम:     | पपऋ। पवऋ:       | पपष्ठ। पवष्ठः   | पपत! पवत?     |
| पपक़; पवक़:   | पपड्र; पवड्र:  | पपहृ; पवहृ:      | पपय। पवय:     | पपऋ। पवऋ:       | पपल्ज। पवल्जः   | पपथ! पवथ?     |
| पपख़; पवख़:   | पपढ्र; पवढ्र:  | पपहु; पवहु:      | पपर। पवर:     | पपल्। पवलः      | पपह्न। पवह्नः   | पपद! पवद?     |
| पपग़; पवग़:   | पपद्र; पवद्र:  | पपहूँ; पवहूँ:    | पपल। पवल:     | पपॡ। पवॡ:       | पपह्न। पवह्नः   | पपध! पवध?     |
| पपज़; पवज़:   | पपर्; पवर्:    | पपरुः; पवरुः:    | पपळ। पवळ:     |                 | पपह्न। पवह्नः   | पपन! पवन?     |
| पपड़; पवड़:   | पपह्न; पवह्न:  | पपरू; पवरू:      | पपव। पवव:     |                 | पपह्न। पवह्नः   | पपप! पवप?     |
| पपढ़; पवढ़:   | पपळ्र; पवळ्र:  | पपदु; पवदु:      | पपश। पवश:     | पपङ्ग। पवङ्गः   |                 | पपफ! पवफ?     |
| पपफ़; पवफ़:   |                | पपदूः पवदूः      | पपष। पवष:     | पपछ्र। पवछ्रः   | पपहु। पवहु:     | पपब! पवब?     |
| पपयः; पवयः    | पपक्तः, पवक्तः | पपर्दुः, पवर्दुः | पपस। पवस:     | पपट्र। पवट्रः   | पपहूँ। पवहूँ:   | पपभ! पवभ?     |
| पपक्ष; पवक्ष: | पपरुः, पवरुः   | - ·              | पपह। पवह:     | पपठ्र। पवठ्रः   | पपहें। पवहें:   | पपम! पवम?     |
| पपज्ञ; पवज्ञ: | पपरूः, पवरूः   | -                | पपक्र। पवकः   | पपड्र। पवड्र:   | पपह्न। पवहूः    | पपय! पवय?     |
|               | पपट्टः पवट्टः  | पपक। पवकः        | पपख़। पवख़:   | पपद्र। पवद्रः   | पपह्रं। पवहुः   | पपर! पवर?     |
| पपअ; पवअ:     | पपट्ठ; पवट्ठः  | पपख। पवख:        | पपग्र। पवगः:  | पपद्र। पवद्रः   | पपहूँ। पवहूँ:   | पपल! पवल?     |
| पपऄ; पवऄ:     | पपठ्ठ; पवठ्ठ:  | पपग। पवग:        | पपज्ञ। पवज्ञः | पपर्। पवर्:     | पपरु। पवरु:     | पपळ! पवळ?     |
|               |                |                  |               |                 |                 |               |

| पपव! पवव?     | पपङ्ग! पवङ्ग?   |               | पपफ-फपव     | पपआ-आपव                | पपद्द-द्दपव | "डपवपड"     |
|---------------|-----------------|---------------|-------------|------------------------|-------------|-------------|
| पपश! पवश?     | पपछु! पवछू?     | पपहु! पवहु?   | पपब-बपव     | पपओ-ओपव                | पपष्ट-ष्टपव | "ढपवपढ"     |
| पपष! पवष?     | पपट्र! पवट्र?   | पपहू! पवहू?   | पपभ-भपव     | पपऔ-औपव                | पपत्भ-भपव   | "णपवपण"     |
| पपस! पवस?     | पपठ्र! पवठ्र?   | पपहृ! पवहृ?   | पपम-मपव     | पपऋ-ऋपव                | पपष्ठ-ष्ठपव | "तपवपत"     |
| पपह! पवह?     | पपड्र! पवडू?    | पपहॄ! पवहॄ?   | पपय-यपव     | पपऋ-ऋपव                | पपल्ज-ल्जपव | "थपवपथ"     |
| पपकः! पवकः?   | पपढू! पवढू?     | पपहुं! पवहुं? | पपर-रपव     | पपल-लपव                | पपह्ल-ह्लपव | "दपवपद"     |
| पपख़! पवख़?   | पपद्र! पवद्र?   | पपहू! पवहू?   | पपल-लपव     | पपॡ-ॡपव                | पपह्न-ह्नपव | "धपवपध"     |
| पपग़! पवग़?   | पपरू! पवरू?     | पपरु! पवरु?   | पपळ-ळपव     |                        | पपह्ल-ह्लपव | "नपवपन"     |
| पपज़! पवज़?   | पपहृ! पवहृ?     | पपरू! पवरू?   | पपव-वपव     |                        | पपह्व-ह्वपव | "पपवपप"     |
| पपड़! पवड़?   | पपळू! पवळू?     | पपदु! पवदु?   | पपश-शपव     | पपङ्र-ङ्रपव            | (4 (4       | "फपवपफ"     |
| पपढ़! पवढ़?   | ~ · · · · · · · | पपदू! पवदू?   | पपष-षपव     | पपछ्र-छ्रपव            | पपहु-हुपव   | "बपवपब"     |
| पपफ़! पवफ़?   | पपक्त! पवक्त?   | पपदृ! पवदृ?   | पपस-सपव     | पपट्र-ट्रपव            | पपहूँ-हूपव  | "भपवपभ"     |
| पपय़! पवय़?   | पपरु! पवरु?     | c c           | पपह-हपव     | पपठ्र-ठ्रपव            | पपहूँ-हूँपव | "मपवपम"     |
| पपक्ष! पवक्ष? | पपरू! पवरू?     | -             | पपक-क़पव    | पपड्र-ड्रपव            | पपहूँ-हूंपव | "यपवपय"     |
| पपज्ञ! पवज्ञ? | पपट्ट! पवट्ट?   | पपक-कपव       | पपख़-ख़पव   | पपढू-ढ्रपव             | पपहुँ-हुँपव | "रपवपर"     |
|               | पपट्टा पवट्ट?   | पपख-खपव       | पपग़-ग़पव   | पपद्र-द्रपव            | पपहूँ-हूँपव | "लपवपल"     |
| पपअ! पवअ?     | पपठ्ठ! पवठ्ठ?   | पपग-गपव       | पपज़-ज़पव   | पपरू-रूपव              | पपरु-रुपव   | "ळपवपळ"     |
| पपऄ! पवऄ?     | पपडूँ! पवडूँ?   | पपघ-घपव       | पपड़-ड़पव   | पपह्र-ह्रपव            | पपरू-रूपव   | "वपवपव"     |
| पपॲ! पवॲ?     | पपडूँ! पवडूँ?   | पपङ-ङपव       | पपढ़-ढ़पव   | पपळू-ळूपव              | पपदु-दुपव   | "शपवपश"     |
| पपइ! पवइ?     | पपढूँ! पवढूँ?   | पपच-चपव       | पपफ़-फ़पव   |                        | पपदूँ-दूँपव | "षपवपष"     |
| पपई! पवई?     | पपद्धॅ! पवद्धॅ? | पपछ-छपव       | पपय्र-य़पव  | पपक्त-क्तपव<br>        | पपर्दृ-दृपव | "सपवपस"     |
| पपउ! पवउ?     | पपद्गः! पवद्गः? | पपज-जपव       | पपक्ष-क्षपव | पप्र-रूपव              |             | "हपवपह"     |
| पपऊ! पवऊ?     | पपद्ध! पवद्ध?   | पपझ-झपव       | पपज्ञ-ज्ञपव | पपरू-रूपव              | -           | "क़पवपक़"   |
| पपए! पवए?     | पपद्भ! पवद्भ?   | पपञ-ञपव       |             | पपट्ट-ट्टपव            | "कपवपक"     | "ख़पवपख़"   |
| पपऐ! पवऐ?     | पपद्व! पवद्व?   | पपट-टपव       | पपअ-अपव     | पपट्ट-ट्रपव            | "खपवपख"     | "गपवपग"     |
| पपऍ! पवऍ?     | पपद्ध! पवद्ध?   | पपठ-ठपव       | पपऄ-ऄपव     | पपठु-ठुपव              | "गपवपग"     | "ज़पवपज़"   |
| पपऎ! पवऎ?     | पपद्द! पवद्द?   | पपड-डपव       | पपॲ-ॲपव     | पपड्ट-ड्टपव            | "घपवपघ"     | "ड़पवपड़"   |
| पपआ! पवआ?     | पपष्ट! पवष्ट?   | पपढ-ढपव       | पपइ-इपव     | पपड्ड-ड्डपव            | "ङपवपङ"     | "ढ़पवपढ़"   |
| पपओ! पवओ?     | पपन्भ! पवन्भ?   | पपण-णपव       | पपई-ईपव     | पपढू-ढूपव              | "चपवपच"     | "फ़पवपफ़"   |
| पपऔ! पवऔ?     | पपष्ठ! पवष्ठ?   | पपत-तपव       | पपउ-उपव     | पपद्ध-द्धपव            | "छपवपछ"     | "य़पवपय़"   |
| पपऋ! पवऋ?     | पपल्ज! पवल्ज?   | पपथ-थपव       | पपऊ-ऊपव     | पपद्ग-द्गपव            | "जपवपज"     | "क्षपवपक्ष" |
| पपऋ! पवऋ?     | पपह्न! पवह्न?   | पपद-दपव       | पपए-एपव     | पपद्ध-द्वपव            | "झपवपझ"     | "ज्ञपवपज्ञ" |
| पपलृ! पवलृ?   | पपह्न! पवह्न?   | पपध-धपव       | पपऐ-ऐपव     | पपद्भ-द्भपव<br>गणद-सात | "ञपवपञ"     |             |
| पपॡ! पवॡ?     | पपह्ल! पवह्न?   | पपन-नपव       | पपऍ-ऍवव     | पपद्व-द्वपव            | "टपवपट"     | "अपवपअ"     |
|               | पपह्व! पवह्व?   | पपप-पपव       | पपऎ-ऎपव     | पपद्ध-द्धपव            | "ठपवपठ"     | "ऄपवपऄ"     |
|               |                 |               |             |                        |             |             |

| "ॲपवपॲ"                        | "डुपवपडु"              | Num-punct spacing | Ii Vowel sign - base      | पपहिपपहिंपपर्हिपप       |
|--------------------------------|------------------------|-------------------|---------------------------|-------------------------|
| "इपवपइ"                        | "ढ्रुपवपढ्ढ"           |                   | पपकिपपकिंपपर्किपप         | पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप |
| "ईपवपई"                        | "द्धंपवपद्ध"           | पवप ₹१०१ वपव<br>  | पपखिपपखिंपपर्खिपप         | पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप |
| "उपवपउ"                        | "द्गपवपद्ग"            | पवप ₹२०१ वपव<br>  | पपगिपपगिंपपर्गिपप         |                         |
| "ऊपवपऊ"                        | "ढूपवपढू"              | पवप ₹३०१ वपव<br>  | पपघिपपघिंपपर्घिपप         |                         |
| "एपवपए"                        | "द्भपवपद्भ"            | पवप ₹४०१ वपव<br>  | पपङिपपङिंपपर्ङिपप         |                         |
| "ऐपवपऐ"                        | "द्वपवपद्व"            | पवप ₹५०१ वपव      | पपचिपपचिंपपर्चिपप         |                         |
| "ऍपवपऍवव                       | "द्धपवपद्ध"            | पवप ₹६०१ वपव      |                           |                         |
| "ऎपवपऎ"                        | "द्दॅपवपद्दँ"          | पवप ₹७०१ वपव      | पपछिपपछिंपपर्छिपप<br>     |                         |
| "आपवपआ"                        | "ष्टपवपष्ट"            | पवप ₹८०१ वपव      | पपजिपपजिंपपर्जिपप         |                         |
| "ओपवपओ"                        | "श्रपवपश्र"            | पवप ₹९०१ वपव      | पपझिपपझिंपपर्झिपप         |                         |
| "औपवपऔ"                        | "вчачв"                |                   | पपञिपपञिंपपर्ञिपप         |                         |
| "ऋपवपऋ"                        | "ल्जपवपल्ज"            | ०००,०१०,०११       | पपटिपपटिंपपर्टिपप         |                         |
| "ऋपवपऋ"                        | "ह्रपवपह्न"            | ००१,०१०,१११       | पपठिपपठिंपपर्ठिपप         |                         |
| "लपवपल्"                       |                        | ००२,०१०,२११       | पपडिपपडिंपपर्डिपप         |                         |
|                                | "ह्रपवपह्न"            | ००३,०१०,३११       | पपढिपपढिंपपर्ढिपप         |                         |
| "ॡपवपॡ"                        | "ह्नपवपह्न"<br>"नगनगन" | ००४,०१०,४११       | पपणिपपणिंपपर्णिपप         |                         |
| " <del>-"-"-</del> "           | "ह्रपवपह्न"            | ००५,०१०,५११       | पपतिपपतिंपपर्तिपप         |                         |
| "ङ्रपवपङ्र"<br>" <del></del> " |                        | ००६,०१०,६११       | पपथिपपथिंपपर्थिपप         |                         |
| "छ्रपवपछ्र"                    | "हुपवपहु"              | ००७,०१०,७११       | पपदिपपदिंपपर्दिपप         |                         |
| "ट्रपवपट्र"                    | "हूपवपहू"              | ००८,०१०,८११       | पपधिपपधिंपपर्धिपप         |                         |
| "ठ्रपवपठ्र"                    | "हपवपह"                | ००९,०१०,९११       | पपनिपपनिंपपर्निपप         |                         |
| "ड्रपवपड्र"                    | "हृपवपहृ"              | 001,010,111       | पपपिपपपिंपपर्पिपप         |                         |
| "द्रपवपद्र"                    | "हुपवपहु"              | 000.080.088       | पपफिपपफिंपपर्फिपप         |                         |
| "द्रपवपद्र"                    | "हूपवपहू"              | 009.030.033       | पपबिपपबिंपपर्बिपप         |                         |
| "रूपवपरू"                      | "रुपवपरु"              |                   | पपभिपपभिंपपर्भिपप         |                         |
| "ह्रपवपह्र"                    | "रूपवपरू"              | 007.080.788       | पपमिपपमिंपपर्मिपप         |                         |
| "ळ्रपवपळ्र"                    | "दुपवपदु"              | 003.080.388       | पपयिपपयिंपपर्यिपप         |                         |
|                                | "दूपवपदूँ"             | ००४.०१०.४११       | पपरिपपरिंपपरिंपप          |                         |
| "क्तपवपक्त"                    | "दृपवपदृ"              | ००५.०१०.५११       | पपलिपपलिंपपर्लिप <b>प</b> |                         |
| "रूपवपरू"                      |                        | ००६.०१०.६११       | पपळिपपळिंपपळिंपप          |                         |
| "ऋपवपऋ"                        |                        | ००७.०१०.७११       |                           |                         |
| "ट्टपवपट्ट"                    |                        | ००८.०१०.८११       | पपविपपविंपपर्विपप         |                         |
| "द्रुपवपट्ठ"                   |                        | 999.090.900       | पपशिपपशिंपपर्शिपप         |                         |
|                                |                        |                   | पपषिपपषिंपपर्षिपप         |                         |
| "ठुपवपठ्ठ"<br>"देपतपद"         |                        |                   | पपसिपपसिंपपर्सिपप         |                         |
|                                |                        |                   |                           |                         |

| Ii Vowel sign              | पपर्क्त्यिपप | पपर्ग्बिपप   | पपङर्खीपप  | पपछ्विपप   | पपर्टिपप            | पपर्सिपप       | पपर्सिपप            |
|----------------------------|--------------|--------------|------------|------------|---------------------|----------------|---------------------|
| clusters                   | पपक्त्विपप   | पपर्ग्भिपप   | पपर्ङ्गिपप | पपर्ज्किपप | पपर्टीपप            | पपर्त्सिपप     | पपर्धिपप            |
| ~_                         | पपर्क्यिपप   | पपर्ग्मिपप   | पपङर्गीपप  | पपर्ज्जिपप | पपटिर्वेपप          | पपर्त्यिपप     | पपर्दिपप            |
| पपर्क्किपप                 | पपक्स्टिंपप  | पपर्ग्यिपप   | पपङ्घिपप   | पपर्ज्झिपप | पपटर्वीपप           | पपर्त्रिपप     | पपर्द्विपप          |
| पपर्क्खिपप                 | पपक्स्डिंपप  | पपर्ग्रिपप   | पपङर्घीपप  | पपर्जिपप   | पपर्विपप            | पपर्त्लिपप     | पपर्दध्यिप <b>प</b> |
| पपर्क्गिपप                 | पपक्स्तिपप   | पपर्ग्लिपप   | पपर्ङ्चिपप | पपर्ज्तिपप | पपर्ट्वीपप          | पपर्त्विपप     | पपदिर्वेपप          |
| पपर्क्चिपप                 | पपक्स्पिपप   | पपर्ग्विपप   | पपर्ङक्षपप | पपर्ज्विपप | पपर्छिपप            | पपर्त्सिपप     | पपर्दित्यपप         |
| पपर्क्छिपप                 | पपक्स्प्रिपप | पपर्ग्सिपप   | पपङक्रीपप  | पपर्ज्ञिपप | पपर्वठ्यपप          | पपर्त्वियपप    | पपर्ध्किपप          |
| पपर्क्जिपप                 | पपर्क्यिपप   | पपर्ग्धिपप   | पपङ्क्रिपप | पपर्ज्बिपप | पपर्डिपप            | पपर्त्क्रिपप   | पपर्ध्यिपप          |
| पपर्क्झिपप                 | पपक्स्प्रिपप | पपर्ग्धिपप   | पपडिर्मपप  | पपर्ज्भिपप | पपड़िपप             | पपर्त्सिपप     | पपर्ध्निपप          |
| पपर्क्टिपप                 | पपर्ख्खिपप   | पपग्र्यिपप   | पपर्ड्यिपप | पपर्ज्यिपप | पपर्डिपप            | पपर्त्जिपप     | पपर्ध्यिपप          |
| पपर्क्टिपप                 | पपर्ख्टिपप   | पपग्धिपप     | पपर्ङ्घिपप | पपर्जिपप   | पपईड्यिपप           | पपर्त्खिपप     | पपर्धिपप            |
| पपर्क्डिपप                 | पपर्ख्डिपप   | पपर्ग्रिपप   | पपर्च्किपप | पपर्ज्लिपप | पपर्ढिपप            | पपर्त्खिपप     | पपर्ध्लिपप          |
| पपर्क्टिपप                 | पपर्ख्णिपप   | पपग्र्मिपप   | पपर्खिपप   | पपर्ज्विपप | पप <b>र्द्धी</b> पप | पपर्त्यिपप     | पपर्ध्विपप          |
| पपर्क्णिपप                 | पपर्ख्तिपप   | पपग्र्यिपप   | पपर्च्चिपप | पपर्झ्किपप | पपर्ढिपप            | पपर्ल्पिपप     | पपर्ध्सिपप          |
| पपर्क्तिपप                 | पपर्ख्दिपप   | पपर्घ्यिपप   | पपर्च्टिपप | पपर्झ्यिपप | पपर्ह्यिपप          | पपर्ट्लिपप     | पपर्न्किपप          |
| पपर्क्थिपप                 | पपर्ख्निपप   | पपर्घ्जिपप   | पपर्च्छिपप | पपर्ड्यिपप | पपर्ढढ्यिपप         | पपर्त्स्यिपप   | पपर्न्खिपप          |
| पपर्क्दिपप                 | पपर्ख्यिपप   | पपर्घ्टिपप   | पपर्च्छिपप | पपर्ड्झिपप | पपर्ण्टिपप          | पपर्त्स्निपप   | पपर्न्चिपप          |
| पपर्क्निपप                 | पपर्ख्यिपप   | पपर्घ्विपप   | पपर्च्हिपप | पपर्झ्तिपप | पपर्ण्टीपप          | पपर्त्स्यिपप   | पपर्न्छिपप          |
| पपर्क्पिपप                 | पपर्ख्यिपप   | पपर्घ्डिपप   | पपर्च्णिपप | पपर्झ्निपप | पपर्ण्ठिपप          | पपर्त्स्विपप   | पपर्न्जिपप          |
| पपर्क्षिपप                 | पपर्खिपप     | पपर्घ्णिपप   | पपर्च्तिपप | पपर्झ्यिपप | पपर्ण्डिपप          | पपित्स्र्न्यपप | पपर्स्झिपप          |
| पपर्क्बिपप                 | पपर्ख्त्रिपप | पपर्घ्तिपप   | पपर्च्थिपप | पपर्झिपप   | पपर्ण्डिपप          | पपर्थ्किपप     | पपर्न्टिपप          |
| पपर्क्षिपप                 | पपर्ख्विपप   | पपर्घ्दिपप   | पपर्च्हिपप | पपर्ड्लिपप | पपर्णिपप            | पपर्थिपप       | पपर्न्ठिपप          |
| पपिर्क्मपप                 | पपर्ख्शिपप   | पपर्घ्निपप   | पपर्खिपप   | पपर्झ्विपप | पपर्ण्तिपप          | पपर्थ्मिपप     | पपर्न्डिपप          |
| पपर्क्यिपप<br>पपर्क्रिपप   | पपर्ख्यिपप   | पपर्घ्विपप   | पपर्जिपप   | पपड़िर्मपप | पपर्ण्यिपप          | पपर्थ्यिपप     | पपर्न्हिपप          |
|                            | पपर्ख्यिपप   | पपर्घ्मिपप   | पपर्च्यिपप | पपर्ञ्चिपप | पपर्णिपप            | पपर्थिपप       | पपर्न्तिपप          |
| पपर्क्लिपप<br>पपर्क्विपप   | पपर्ख्यिपप   | पपर्घ्यिपप   | पपर्चिपप   | पपर्ञ्जिपप | पपर्ण्विपप          | पपर्थ्लिपप     | पपर्स्थिपप          |
| पपक्शिपप<br>पपर्क्शिपप     | पपर्ग्किपप   | पपर्घ्रिपप   | पपर्च्लिपप | पपर्ञ्शिपप | पपर्त्किपप          | पपर्थ्विपप     | पपर्न्दिपप          |
| पपाक्शपप<br>पपर्क्षिपप     | पपर्गिपप     | पपर्घ्लिपप   | पपर्च्चिपप | पपञ्चिंपप  | पपर्त्खिपप          | पपर्थ्सिपप     | पपर्स्थिपप          |
| पपर्क्सिपप<br>पपर्क्सिपप   | पपर्ग्जिपप   | पपर्घ्विपप   | पपर्च्सिपप | पपर्ञ्जिपप | पपर्त्तिपप          | पपर्द्रिपप     | पपर्न्निपप          |
| पपर्क्सिपप<br>पपर्क्हिपप   | पपर्ग्णिपप   | पपर्घ्सिपप   | पपर्चिपप   | पपर्दिपप   | पपर्स्थिपप          | पपर्द्धिपप     | पपर्न्पिपप          |
| पपक्ळिपप<br>पपर्क्ळिपप     | पपर्ग्तिपप   | पपर्घ्ल्यिपप | पपर्च्मिपप | पपर्टीपप   | पपर्लिपप            | पपर्हिंपप      | पपर्न्फिपप          |
| पपक्किपप<br>पपक्किर्यपप    | पपर्ग्दिपप   | पपर्ङ्किपप   | पपर्च्यिपप | पपर्दूिपप  | पपर्त्यिपप          | पपर्द्धिपप     | पपर्न्बिपप          |
| पपाक्क्यपप<br>पपर्क्त्रिपप | पपर्श्विपप   | पपङर्कीपप    | पपर्छ्यिपप | पपट्टीपप   | पपर्त्फिपप          | पपर्द्विपप     | पपर्भिपप            |
| पपाक्त्रपप                 | पपर्ग्निपप   | पपङ्खिपप     | पपर्छिपप   | पपर्ट्यिपप | पपर्त्बिपप          | पपर्द्धिपप     | पपर्मिपप            |
|                            |              | •            |            |            |                     | -e ·           |                     |

Khula - Bold v. 1.002 December 3, 2014 10:52 PM

| पपर्न्यिपप<br>पपर्न्रिपप | पपर्ष्यिपप<br>पपर्जिपप | पपर्म्बिपप<br>पपर्म्भिपप | पपर्ल्थिपप<br>पपर्ल्दिपप | पपर्स्जिपप<br>पपर्स्टिपप | पपर्ह्विपप<br>पपर्ळ्यिपप |
|--------------------------|------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| पपर्न्लिपप               | पपर्प्पिपप             | पपर्म्मिपप               | पपर्ल्पिपप               | पपर्स्ठिपप               | पपर्ळ्पिपप               |
| पपर्न्विपप               | पपर्प्किपप             | पपर्म्यिपप               | पपर्ल्फिपप               | पपर्स्डिपप               | पपळ्विपप                 |
| पपर्न्सिपप               | पपर्प्मिपप             | पपर्म्रिपप               | पपर्ल्बिपप               | पपर्स्हिपप               | पपर्स्यिपप               |
| पपर्न्हिपप               | पपर्प्यिपप             | पपर्म्लिपप               | पपर्ल्भिपप               | पपर्स्तिपप               | पपर्ध्मिपप               |
| पपर्म्यिपप               | पपर्प्रिपप             | पपर्म्विपप               | पपर्ल्मिपप               | पपर्स्थिपप               | पपर्स्विपप               |
| पपन्भिर्वेपप             | पपर्प्लिपप             | पपर्म्शिपप               | पपर्ल्यिपप               | पपर्स्दिपप               |                          |
| पपर्म्यिपप               | पपर्ष्विपप             | पपर्म्सिपप               | पपर्ल्रिपप               | पपर्स्निपप               |                          |
| पपन्स्टिपप               | पपर्ष्मिपप             | पपर्म्हिपप               | पपर्ल्विपप               | पपर्स्पिपप               |                          |
| पपर्न्स्यिपप             | पपर्प्सिपप             | पपर्म्म्यिपप             | पपर्ल्सिपप               | पपर्स्फिपप               |                          |
| पपर्ह्यिपप               | पपर्ब्ळिपप             | पपर्म्प्रिपप             | पपर्ल्हिपप               | पपर्स्बिपप               |                          |
| पपन्ज्यिपप               | पपर्प्त्यिपप           | पपर्म्ब्यिपप             | पपिल्र्यिपप              | पपर्स्मिपप               |                          |
| पपन्क्सिपप               | पपर्फ्किपप             | पपर्म्ब्रिपप             | पपर्ल्ह्यिपप             | पपर्स्यिपप               |                          |
| पपर्त्स्यिपप             | पपर्प्जिपप             | पपर्म्थिपप               | पपल्र्क्यिपप             | पपर्स्रिपप               |                          |
| पपन्त्सिपप               | पपर्फ्टिपप             | पपर्म्भिपप               | पपर्ल्थिपप               | पपर्स्लिपप               |                          |
| पपर्स्थिपप               | पपर्फ्तिपप             | पपर्म्विपप               | पपर्ल्ड्रिपप             | पपर्स्विपप               |                          |
| पपर्स्थिपप               | पपर्प्दिपप             | पपर्य्यिपप               | पपर्श्किपप               | पपर्स्सिपप               |                          |
| पपर्न्द्रिपप             | पपर्म्निपप             | पपर्य्रिपप               | पपर्श्खिपप               | पपस्म्यिपप               |                          |
| पपर्न्ह्रिपप             | पपर्फ्पिपप             | पपर्लिपप                 | पपर्श्चिपप               | पपर्स्क्रिपप             |                          |
| पपर्स्थिपप               | पपर्फ्मिपप             | पपर्व्यिपप               | पपश्छिपप                 | पपस्त्र्यपप              |                          |
| पपर्स्थिपप               | पपर्प्यिपप             | पपर्व्रिपप               | पपर्श्टिपप               | पपस्थ्यिपप               |                          |
| पपर्म्प्रिपप             | पपर्फ्रिपप             | पपर्व्लिपप               | पपर्श्तिपप               | पपस्म्यिपप               |                          |
| पपन्स्म्यपप              | पपर्फ्लिपप             | पपर्व्सिपप               | पपर्श्निपप               | पपस्त्विपप               |                          |
| पपर्प्किपप               | पपर्फ्शिपप             | पपर्व्हिपप               | पपर्श्बिपप               | पपर्स्प्रिपप             |                          |
| पपर्झिपप                 | पपर्भ्निपप             | पपर्ल्किपप               | पपर्श्मिपप               | पपस्र्यिपप               |                          |
| पपर्प्टिपप               | पपर्भ्यिपप             | पपर्ल्खिपप               | पपर्श्यिपप               | पपर्ह्मिपप               |                          |
| पपर्खिपप                 | पपर्भ्रिपप             | पपर्ल्गिपप               | पपर्श्रिपप               | पपर्ह्तिपप               |                          |
| पपर्प्टीपप               | पपर्भ्लिपप             | पपर्ल्चिपप               | पपर्श्लिपप               | पपर्ह्यिपप               |                          |
| पपर्खिपप                 | पपर्भ्विपप             | पपर्ल्जिपप               | पपर्श्विपप               | पपर्ह्मिपप               |                          |
| पपर्व्हिपप               | पपर्भ्यिपप             | पपर्ल्टिपप               | पपश्शिपप                 | पपर्हम्यिपप              |                          |
| पपर्णिपप                 | पपर्म्तिपप             | पपर्ल्ठिपप               | पपर्श्चिपप               | पपर्ह्मिपप               |                          |
| पपर्प्तिपप               | पपर्म्दिपप             | पपर्ल्डिपप               | पपर्स्किपप               | पपर्ह्रिपप               |                          |
| पपर्ष्यिपप               | पपर्म्निपप             | पपर्ल्डिपप               | पपर्स्खिपप               | पपर्ह्मिपप               |                          |
| पपर्प्दिपप               | पपर्म्पिपप             | पपर्ल्तिपप               | पपर्स्छिपप               | पपर्ह्मिपप               |                          |

#### Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्शपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्फपपक्यपप

पग्डपपग्रसपग्यपप पग्डपपग्रसपग्यपपग्यपपग्यपपग्यपपग्यप पग्डपपग्रसपग्रसपग्यपपग्यपपग्रस पग्डपपग्रसपग्रसपग्यपपग्यपपग्रस पग्रसपग्रसपग्रसपग्यपपग्रस पग्रसपग्रसपग्यपपग्यपपग्रस पग्रसपग्रसपग्यपपग्यपपग्यपपग्रस पग्रसपग्रसपग्यपपग्यपपग्यपपग्रस पग्रसपग्रसपग्यपपग्यपपग्यपपग्यपपग्रस पग्रसपग्रसपग्यपप

पपच्कपपच्खपपञ्चापपच्चपपच्छपपच्छप पच्छपपच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्छपपच्छप पच्छपपच्जपपच्कपपच्थपपच्दपपच्धपपच्जप पच्नपपच्मपपच्कपपच्बपपच्भपपच्मपपच्यप पच्चपपच्यपपच्कपपच्छपपच्छप पच्चपपच्यपपच्सपपच्हपपच्कपपच्खप पच्जपपच्झपपच्झपपच्झपपच्यप पच्जपपच्झपपच्झपपच्झपप पपःकपपःखपपःगपपःयपपःखप पःखपपःजपपःद्वपपःअपपःदपपःखप पःद्वपपःगपपःतपपःथपपःदपपःथपपःजप पःगपःगपपःमपपःखपपःअपपःमपपःयप पःगपाःयपपःकपपःखपपःअपपःयप पःगपःयपपःलपपःखपपःखपपःशप पःगपःयपपःलपपःखपपःखपपःगप पःगपःयपःयपः

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपछफपपछबप पछभपपछमपपछ्यपपछूपपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछमप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्छप पज्ढपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्बपपज्भपपज्यप पज्जपपज्सपपज्लपपज्ळपपज्खपपज्शप पज्थपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञप पज्डपपज्हपपज्कपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइग्गपपइतपपइथपपइदपपइथपपइनप पइनपपइम्मपपइक्षपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइक्रपपइखपपइग्गपपइजप पइडपपइढपपइसपपइसपप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्डपपट्डप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्चप पट्तपपट्णपपट्तपपट्थपपट्चप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्चप पट्रपपट्सपपट्लपपट्ळपपट्खपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्कपपट्यपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्मपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्ळपपठ्मपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्ढपपठ्फपपठ्यपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्थपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्नपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्ळपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्दपपड्सपपड्सपपड्यपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ञपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्जप पढ्डपपढ्डपपढ्डपपढ्जप पढुडुपपढुढुपपढुफ़पपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठप पण्डपपण्णपपण्कपपण्खपपण्कपपण्यप पण्नपपण्पपण्कपपण्ळपपण्कपपण्यप पण्पपण्रपण्लपपण्ळपपण्ळपपण्वपण्शप पण्षपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्जप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यप

पपत्कपपत्खपपतापपत्यपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्छप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्थपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्इपपत्कपपत्यपप

पपद्कपपद्खपपद्वपपद्वपपद्वप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ठपपद्णपपद्तपपद्थपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपद्कपपद्ळपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्इपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्इपपद्कपपद्यप

पपध्कपपध्खपपधापपध्यपपद्धपपध्यप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्डप पध्नपपध्यपपध्मपपध्यपपध्मपपध्मपपध्यप पध्नपपध्मपपध्मपपध्वपपध्मपपध्मप पध्मपपध्मपपद्मपप्कपपध्खपपध्मपप्भाप पध्मपपध्मपपद्मपप्कपपध्खपपध्मपप्भाप पध्मपध्सपपध्मपप्भाप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्मप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्तपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्द्यपपन्सपपन्यपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्खपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन् पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपत्रपपन्त्रपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्थपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्द्रपपन्कपपन्यपप

पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपद्धपपप्कपपप्कप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्कप पप्जपपथ्यपपप्यपपप्रपप्जपपप्जप पप्जपपप्कपपप्यपपप्रपपप्लपप्जप पप्जपपप्कपपप्शपपप्कपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापप्जपपद्भपपद्भपप्कपपप्यपप पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डप पम्दपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नप पम्नपपम्पपपम्भपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यप प्रमपपम्रपपम्लपपम्ळपपम्ळपपम्वपपम्शप पम्भपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपप्जप पम्हपपम्द्रपपम्झपपम्यपप

पपक्कपपब्खपपबापपब्धपपब्ह्नपपब्यपपब्छप पब्जपपब्झपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सप पब्जपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सप पब्जपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सप पब्जपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपव्सपपव्सप प्रवापपक्जपपब्ह्नपपब्सपपब्सपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्छपपम्डप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपश्चपपम्नपपम्नप पम्फपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्रपपम्लप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्भपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्कपपम्सपप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपय्गपपय्घपपय्हपपय्घपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्दपपय्धपपय्हपपय्वप पय्जपपय्नपप्थपपय्मपप्यपप्रपपय्नपप्यप पय्कपपय्कपपय्वपपय्भपपय्यपप्रपपय्नप पय्कपपय्कपपय्वपपय्जपपय्झपपय्सपप्रहप पय्कपपय्खपपयापपय्जपपय्झपपय्झप प्रयाप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ढपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्क्षपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्ढप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपश्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्टपपन्ठपपन्छपपन्यपप्मप पन्तपपश्चपपन्यपश्चपपन्नपपन्मपपन्कप पन्छपपन्वपपश्चपपन्सपपन्हपपन्कपपन्खप पन्जपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्धपपत्ङपपत्चपपत्खप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खप पत्जपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपप् पत्पपपत्कपपत्खपपत्भपपत्मपपत्यपपत्नप पत्रपपत्कपपत्खपपत्भपपत्यपपत्थप पत्सपपत्नपपत्कपपत्खपपत्नपपत्शपपत्थप पत्सपपत्हपपत्कपपत्खपपत्नापपत्जपपत्डप पत्दपपत्कपपत्यपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपळपपळकप पळभपपळमपपळथपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळकपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग़पपळजपपळड़प पळढपपळझपपळग़पप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळभपपळनपपळनपपळपपळपपळभप पळभपपळमपपळयपपळूपपळऱपपळलप पळळपपळकपपळवपपळशपपळजपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रपपळजपपळड़प पळढपपळकपपळखपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नप पश्पपश्कपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्गपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्थपपस्तपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्टपपस्कपपस्यपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्डपपस्चपपस्छप पस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्डप पह्लपपस्तपपस्थपपस्वपपस्थपपह्लपपस्मप पस्फपपस्बपपस्भपपह्मपपह्मपपस्पपद्भप पस्कपपस्ळपपह्लपपस्शपपस्थपपस्सपपस्हप पस्कपपस्खपपस्गपपस्जपपस्डपप पस्कपपस्खपपस्गपप

पपक्ष्कपपक्ष्खपपक्ष्मपपक्ष्यपपक्ष्यपक्ष्यप पक्ष्यपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्मप पक्ष्यपक्ष्मपपक्षमप

#### less common half-forms

पपरक्रपपरख्यपरग्गपपर्यपपरङ्गपपर्यपपरछप परज्जपपरझपपरञ्जपपरटपपरठपपरङ्गपपर्द्धप परग्गपपरतपपरथ्यपपरद्मपपर्थपपरञ्जप पर्यापपर्व्वपपरभपपरमपप पपर्यपपर्लप पर्द्यपपर्यापरभपपरशपप पपर्यापरस्मपपर्द्भप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्ध-छप

पद्धजपपद्धझपपद्धअपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धढप पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धपप पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्धह-पप

पपद्दकपपद्दखपपद्दगपपद्घपपद्दङपपद्दचपपद्दछप पद्दजपपद्दअपपद्दटपपद्दठपपद्दडप पद्दणपपद्दतपपद्दथपपद्दपपद्दपप पद्दफपपद्दवपपद्दभपपद्दमपप पद्दकपपद्दपपद्दशपप पपद्दवपपद्दलप पद्दळपपद्दपपवपपद्दशपप पपद्दवपपद्दसपपद्दरपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रडपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रञपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रयपपक्रसपपक्रहपप

पपर्क्रपपरुखपपरुगपपरुघपपरुङ्पपरुघप परुछपपरुजपपरुझपपरुञपपरुटपपरुठप परुडपपरुढपपरुणपपरुतपपरुथपपरुदपपरुधप परुनपपरुपपपरुफपपरुबपपरुभपपरुमप परुयपपरुजपपरुळपपरुपपवपपरुशप परुषपपरुसपपरुहपप पपःक्रपपःख्रपपःग्रापपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःज्ञपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःग्रापपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःग्रपपःश्चपपःश्मपपःश्मपपःश्चप पःग्रपवपपःशापप पपःश्मपपःश्चपपः

पपज्रमपज्रखपपज्रापपज्र्यपपज्रः पपज्र्यपपज्र्थप पज्रापपज्रापपज्र्यपपज्र्यपपज्र्यपपज्रमप पज्र्मपपज्रापपज्र्मपपज्रमपपज्रमप पज्रमपपज्रापपज्रमपपज्रमप पज्र्षपपज्रमपयज्ञापपज्रमपपज्रसपपज्रह्मप

पपद्रक्रपपद्रखपपद्गापपद्ग्यपपद्ग्यपद्ग्यप पद्ग्र्छपपद्ग्र्जपपद्ग्र्मपपद्ग्यपद्ग्र्यपद्ग्र्मप

पपञ्कपपञ्खपपञ्जापपञ्चपपञ्छपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्जापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्लपपञ्ळपपञ्मपवपपञ्शापप पपञ्रपपञ्सप पञ्हपप

पपण्कपपण्खपपण्रापपण्डापपण्डपपण्डपपण्डप पण्जपपण्डापपण्ञपपण्टपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्डपपण्डपपण्जप पण्कपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्रपवपपण्डापप पपण्डपपण्लप

पपःकपपःखपपत्रापपश्चपपःखपपश्चपपश्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपः पञ्जपपश्चपपञ्चपपश्चपपञ्जपपश्मपपञ्चप पञ्जपपञ्चपप पपत्र्यपपञ्जपपञ्चपपः पञ्चपपञ्चपपञ्चपपः

पप्रक्रपप्रख्यपप्रगपप्रघपप्रख्यपप्रख्य प्रज्ञपप्रद्भपप्रजपप्रद्रपप्रखपप्रद्वप प्रणपप्रतपप्रथपप्रद्वपप्रधपप्रज्ञपप्रमप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रज्ञप प्रख्यप्रभपवपप्रशपप पप्रथपप्रसप्पर्हपप

पप्रक्रपप्रख्यप्रभापप्रध्यप्रध्रुपप्रख्यप्रध्यप्यप्रध

पपन्त्रपपन्छपपन्यपपन्छप पन्जपपन्सपपन्ञपपन्दपपन्छपपन्छप पन्जपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्भप पन्त्रपपन्भपपन्मपप पपन्यपपन्त्रपपन्थपन्भप वपपन्थपप पपन्थपपन्सपपन्हपप

### पप्रापप पपप्रपपप्रसपपप्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रजपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रचपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रथपपप्रशपप पपप्रथपपप्रसपपप्रहपप

पप्रक्रपप्रख्यपप्रगपप्रविपप्रद्धःपप्रविपप्रदेप प्रज्ञपप्रद्भपप्रविपप्रदेपप्रदेपप्रदेपप्रदेप प्रविपप